29/4/20 ①
UG Sem II

24/4/19

# Dominant Caste (प्रभुजाति)

→ भारतीय समाजशास्त्रों में इस अवधारणा का प्रयोग सर्वप्रथम M.N. Srinivas, निवास ने 1959 ई. में मैसूर के गाँव का अध्ययन करने के समय किया। M.N. Srinivas निवास के अनुसार, प्रभुजाति की कुछ विशेषताएँ होती है, जैसे :- अधिक भू-स्वामित्व, अधिक संख्या, और जाति संस्करण में स्थान गाँव में आज कल वास्तविक अभिजात वर्ग, सामाजिक, आर्थिक आधार रखता है। प्रो. एस.सी. दुबे - ने इस संबंध प्रभावशाली व्यक्तियों की बात की कही है। इन्होंने श्री निवास की प्रभुजाति की अवधारणा को बहुत उपयुक्त नहीं माना जबकि श्री निवास के अनुसार "प्रभुजाति" गाँव को चलाने के लिए प्रकार्यवादी भूमिका अदा करते हैं। S.C दुबे ने "प्रभुजाति" अवधारणा में कहते है, कि आज के गाँव सत्ता संरचना में प्रभुजाति का सत्ता महत्व समाप्त हो गया है, अब प्रभावशाली व्यक्ति अधिक महत्व रखता है।

प्रो. M.N. Srinivas निवास ने अपनी पुस्तक - "Indian Villages" में प्रभुजाति की परिभाषा करते हुए लिए है, कि " एक जाति तब प्रभु कही जाती है। जब वह सीधा के आधार पर गाँव तथा स्थानिय क्षेत्र में शक्तिशाली हो और प्रभावशाली आर्थिक तथा राजनितिक शक्ति रखती हो। यह आवश्यक नहीं है, कि वह परम्परागत जाति क्रम स्वपान में सर्वोच्च जाति

MY SCHOLAR
Scanned with CamScanner

ही हो।"

प्रभुजाति की अवधारणा को और अधिक स्पष्ट करने के लिए श्री निवास ने कुछ प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया है:-

(1) आधुनिक शिक्षा एवं नवीन व्यवसाय :- प्रभु जाति अन्य जाति की अपेक्षा अधिक शिक्षित एवं परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर अन्य व्यवसाय में लगी रहती है। समाज में सामाजिक और संक्ष संख्यिक संख्यिक होने के कारण उनका संपर्क प्रशासकों के अधिकारीयों के साथ होता है जिसका प्रभाव अन्य जातियाँ भी मानती हैं।

(2) आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभुत्व :- हैं और गाँव में प्रभुजाति आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से अपना प्रभुत्व रखती है। वैसे ही गाँव में अधिक भूमि उसके पास होती है। जिस पर लोगों से कार्य कराया जाता है। मैसूर के "रामपुरा" और "डेलाना" गाँवों में वहाँ के प्रभुजाति के पास गाँव की 80% की भूमि थी। गुजरात के कसेंद्रा गाँव के राजपूतों के पास गाँव की सारी भूमि थी। प्रभुजातियाँ सम्पन्नता के कारण अन्य लोगों को ऋण देने में सक्षम होती है। इस प्रकार गाँव के अन्य जाति के लोग इन प्रभुजाति पर निर्भर होते हैं।

(3) जाति व्यवस्था में ऊँची सामाजिक स्थिति :-

→ प्रभुजाति के लिए यह आवश्यक है, कि जातियों संस्तरण में भी वह अपना उच्च स्थान रखती हो। भारतीय व्यवस्था में कोई भी निम्न प्रभुजाति नहीं पाई जाति जाती है। क्योंकि सामाजिक व्यवस्था में जातियों की प्रति प्रतिष्ठा और अस्पृश्यता का महत्व पूर्ण स्थान रहा है।

(4) संख्यात्मक शक्ति :- "प्रभुजाति" की सबसे पहली पहचान उसका संख्या में अधिक मात्रा में होना। संख्या में अधिक होने के कारण वह अन्य जातियों पर अपना प्रभुत्व रखती है।

(5) संपूर्ण गाँव की एकता, एवं न्याय एवं कल्याण के लिए कार्य करना :- "प्रभुजाति" गाँव की एकता बनाए रखने में अपना योगदान देती है, और ऐसे कार्य करती है, जिसमें सारे समुदाय की भलाई हो, ये पूरे गाँव में न्याय का कार्य करते है। प्रभुजाति के अन्दर एक गुण यह भी होता है, कि वे अन्य जाति के नियमों का समान करते है, इस प्रकार प्रभुजाति निष्पक्ष और तटस्थ तटस्थ होती। वैसे तो भूमि का स्वामित्व कुछ ही लोगों तक सिमित होती रहता है, परन्तु भूमि का

MY SCHOLAR

Scanned with CamScan

सम्मिलित होने से ही वह प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न नहीं हो जाती है। इसके लिए आवश्यक है कि कुछ अन्य आयामों का होना जैसे :- उच्च शिक्षा, प्रशासनिक कार्यों की समझ व राजनीतिक मामलों में भागीदारी, प्रभुजाति की अवधारणा के महत्व पर अपने विचार स्पष्ट करते हुए, प्रो श्री. निवास ने लिखा है कि "प्रभुजाति" भारत में सामाजिक मानव क्षेत्र में दूसरों के लिए व्यवहार प्रतिमान के अध्ययनों अध्ययनों की लाभदायक और उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करती है।

26/4/19

* प्रभुजाति की अवधारणा का आलोचनात्मक मूल्यांकन :-

→ M.N. Sri निवास द्वारा दी गई प्रभुजाति की अवधारणा फिर भी अनेक विद्वानों ने इसकी आलोचना की है। S.C दुबे ने "Contribution to Indian Sociology" नामक पत्रिका के 1968 के अंक में जाति "प्रभुत्व तथा 'गुट' बंदी पर अपनी लेख में प्रभुजाति की अवधारणा का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया उनकी आलोचना की प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है :-



Scanned with CamScanner

(1) ~~यद्धि भी~~ यद्यपि सदस्यों की संख्या अधिक होती है। जो प्रभुता का एक महात्वपूर्ण तत्व है। फिर भी यह किसी जाति को प्रभुजाति बनाने के लिए अनिवार्य नहीं है। ग्रामिण इस बात की ओर इंगित करते कि संख्या की दृष्टि से कमजोर जातियाँ भी प्रभु जातियाँ हो सकती है तथा ~~उन~~ उनमें अधिक एकता पाई जाती है।

(2) आर्थिक सत्ता का प्रयोग राजनितिक सत्ता अथवा आर्थिक सत्ता को बढ़ाने के किया जा सकता है। इससे आधुनिक शिक्षा एवं व्यवसाय ग्रहण करने में भी सरलता मिलती है। परन्तु आर्थिक साधनों का एक ही जाति में केन्द्री करण उस जाति के ~~बिच~~ विभिन्न परस्पर ~~क~~ पैदा कर सकता है। इससे जाति श्रेणीयों में बट सकती है। तथा इसमें एकता कम हो सकती है।

(3) शिक्षा के साथ प्रतिष्ठा का कुछ अंश जुड़ा हुआ है। शिक्षा उच्च प्रतिष्ठा तथा जाति ~~ब~~ में संतगत व्यवसाय को ~~ग्रह~~ ग्रहण करने के लिए भी सहायक है। परन्तु पश्चिमि शिक्षा से व्यक्तियों को अपनी जाति के प्रति अलगाव उत्पन्न हो सकता है तथा उनके लिए जातियाँ हितों से अधिक कुछ व्यक्तियों की हित अधिक महात्वपूर्ण हो जाती है।



Scanned with CamScan

(4) जाति जिसके पास सामी अथवा आर्थिक प्रभुता के तत्व हैं। जरुरी नहीं है, कि गाँव में प्रभुजाति हो, जातियाँ एकता तथा शक्ति का समन्वय प्रभुजाति होने के लिए अनिवार्य हैं।

(5) ऐसा कहा गया है, कि जाति, स्थानिय, क्षेत्रीय, प्रदेशीक, अथवा राष्ट्रीय स्तर की महत्वपूर्ण राजनितिक शक्ति है, इस वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता है, परन्तु गुट बंधिया भी वोट अथवा चुनाव के परिणाम को प्रभावित कर सकती हैं।

Stop

x